# “मीरा कांत का नाट्य साहित्य : एक अनुशीलन”

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,
नांदेड के मानव्य विद्या संकाय अंतर्गत
पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

## शोध-प्रबंध की रुपरेखा


शोध-कर्ता

**पार्वती रामप्रसाद देशमुख**

शोध-निर्देशिका

**डॉ. प्रतिभा जी. येरेकार**

सहयोगी प्राध्यापिका एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, धर्माबाद
जि. नांदेड, महाराष्ट्र

अनुसंधान-केंद्र

**पीपल्स कॉलेज, नांदेड**


जुलाई - 2021

**प्रस्तावना :**

आज02 साहित्य जगत में स्त्री लेखन का विस्तार और विकास निरंतर हो रहा हैं। महिलाओं ने अपनी लेखनी की ताकत से सामाजिक विसंगतियों के खिलाफ आवाज उठायी हैं।

मीरा कांत ऐसी महिला लेखिकाओं के बीच एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। उन्होंने आधुनिक नाटककार के रुप में हिंदी साहित्य में अपना विशेष स्थान प्राप्त किया है। वे अन्य महिला लेखिकाओं की तरह कहानी या उपन्यास विधा को अधिक न अपनाते हुए नाटक जैसी जटिल, अनुशासन युक्त विधा को अपने साहित्य का विषय बनाया है। उनका व्यक्तित्व जितना विविधताओं से भरा हुआ है उतना ही उनका साहित्य भी विभिन्नाताओं से ओतप्रोत है।

मीरा कांत ने अपने बदलते परिवेश में स्त्री -संघर्षो, अधिकारों, शोषण एवं विद्रोहों का यथार्थ चित्रण करने के साथ-साथ स्त्री-अस्मिता से जुड़े गंभीर प्रश्नो पर अपने विचार व्यक्त कीए हैं। अपने गद्य एवं पद्य की सभी विधाओं जैसे- कहानी, उपन्यास, नाटक, कविता, यात्रावृत्तांत, बाल-साहित्य आदि में प्रशस्त लेखन कार्य को संपन्न किया हैं।

**अनुसंधान का उद्देश्य एवं महत्त्व :**

कोई भी कार्य बिना किसी उद्देश्य के नहीं किया जाता। हर कोई कार्य करने के पीछे कुछ न कुछ उद्देश्य एवं उसका महत्त्व होता ही हैं। मेरा “मीरा कांत का नाट्य साहित्य” इस विषय पर होने जा रहा शोध-कार्य भी निम्नता से सौद्देश्य हैं-

- जीवन की वास्तविक घटनाओं एवं समस्याओं का चित्रण उनके साहित्य में देखने को मिलता है। इसीलिए वास्तविक जीवन के साथ उन समस्याओं को जोड़कर उसका अध्ययन करना मेरे इस शोध-कार्य का प्रमुख उद्देश हैं।
- एक संवेदनशील रचनाकार के रुप में मानवीय संवेदना का चित्रण, एक यथार्थवादी साहित्यकार के रुप में अनेक प्रश्नों एवं विभिन्न पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, एवं धार्मिक समस्याओं का चित्रण, एक महिला लेखिका के रुप में नारी जीवन की विभिध समस्याओं का चित्रण किस प्रकार से हुआ हैं, आदि दृष्टिकोण से उनके नाट्य साहित्य को देखना, परखना मेरे इस अनुसंधान कार्य का उद्देश्य हैं।
- मीरा कांत सक्रिय, बहुमूखी, प्रतिभा की धनी हैं। संघर्षशील स्त्री और समाज की मुख्यधारा से छुटे व्यक्ति उनके साहितय की धुरी हैं। उनके नाट्य-साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन करना।
- मीरा कांत के नाट्य साहित्य के सन्दर्भ में अन्य विषयों पर अनुसन्धान होता है क्या? इस सन्दर्भ में संभावनाओं को रेखांकित करना।

आदि प्रस्तुत शोध-कार्य के उद्देश्य हैं।

**विषय का पूर्व विहंगावलोकन :**

अनुसंधान का पूर्व विहंगावलोकन करने के उपरांत यह पता लगा कि, मीरा कांत स्त्री-संवेदना की सशक्त अभिव्यक्ति करनेवाली लेखिका हैं। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को आधार बनाकर वर्तमान जीवन की स्थितीयों की पड़ताल लेकर वह चिंतन-मनन के द्वार खोलने का प्रयास करती हैं। इसी कड़ी में 2004 में प्रकाशित उनका प्रसिद्ध नाटक 'नेपथ्य राग' हैं। इसमें खना नामक स्त्री कथा के माध्यम से लेखिका ने प्रतिभावान संघर्षशील स्त्री के जीवन की पीड़ा को स्वर दिया हैं।

यह नाटक पढ़ने के बाद मुझे 'मीरा कांत के नाट्य साहित्य' को पढ़ने के साथ-साथ उनके नाट्य साहित्य में अनुसंधान के प्रति रूचि निर्माण हुई। अतः मैंने उनपर हुए अनंसधान के विषयों की खोज की हैं, जो निम्नलिखित है-

- **एम.फिल. :**

1) दिल्ली विश्वविद्यालय से 'मीरा कांत के नाटक नेपथ्य राग में स्त्री-प्रश्न' विषय पर वर्ष 2007 में शोध संपन्न।

2) विनायक मिशन विश्वविद्यालय सेलम, तमिलनाडु से 'मीरा कांत के नाटक : संवेदना एवं शिल्प' विषय पर वर्ष 2008 में शोध संपन्न।

3) डॉ. बाबा साहेब आम्बेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद से 'डॉ. मीरा कांत कृत नेपथ्य राग : एक अनुशीलन' विषय पर वर्ष 2009 में एम.फिल. शोध संपन्न।

4) दिल्ली विश्वविद्यालय से 'विस्थापन की समस्या और मीरा कांत का नाटक काली बर्फ' विषय पर 2009 में शोध संपन्न।

- **पीएच.डी. :**

    1) उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद से 'मीरा कांत : व्यक्तित्व एवं कृतित्व : एक अनुशीलन' विषय पर वर्ष 2011 में पीएच.डी. संपन्न।

    2) स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड से 'मीरा कांत के नाट्य साहित्य का चरित्रगत अध्ययन' विषय पर वर्ष 2018 में पीएच.डी. संपन्न।

इसप्रकार मैंने मीरा कांत के नाट्य साहित्य पर पूर्ववर्ती शोध-कार्य का विहंगावलोकन किया है।

**विषय-चयन की प्रेरणा :**

किसी भी शोध-कार्य की प्रेरक भाव-भूमि के रूप में मनुष्य की जिज्ञासा वृत्ती होती हैं। संसार की प्रत्येक वस्तुओं की प्रति अजीब-सी जिज्ञासा निहित हैं। साहित्य में शोध-कार्य के पीछे यही जिज्ञासा कुछ नया देने की सोच जिम्मेदार है। ज्ञान-पिपासु के लिए ज्ञान की कोई सीमा नही हैं। वह जितना चाहे, जैसा चाहे, जिस रूप में चाहे ज्ञान अर्जित कर सकता हैं। किन्हीं विशेष परिस्थितीयों में मनुष्य की जिज्ञासा वृत्ती एक निश्चित दिशा तय करने लगती है और शोध-

कार्य का स्वरुप भी वहीं से आकर ग्रहण करने लगता हैं। मेरे अनुसंधित्सु रुप की भुमिका के पीछे सही जिज्ञासावृत्ति कारुणरुप हैं।

मीरा कांत लगभग दो दशक से निरंतर अपने कथा-साहित्य, नाटकों तथा कभी-कभार कविताई और निबंधो के माध्यम से सिर्फ हाशिए पर जगह पाने वाले निरुपाय मनुष्य की पीड़ा को नेपथ्य से मंच के बीचोबीच लाने में सचेष्ट हैं। संघर्षशील स्त्री और समाज की मुख्यधारा से छूटे हुए व्यक्ति इनके साहित्य की धुरी रही हैं। यही कारण हैं इन्होंने उपेक्षित और प्रताड़ित नारी को केन्द्र में रखकर सृजन किया हैं।

मीरा कांत का नाटक 'नेपथ्य राग' उस रागिनी की कथा है जो युग-युगान्तर से समाजरुपी रंगमंच के केन्द्र में आने के लिए संघर्षरत हैं। इसी संघर्ष को नाटक प्रस्तुत करता है।

यह नाटक पढ़कर मुझे मीरा कांत के अन्य नाटक पढ़ने की मंशा हुई और "मीरा कांत के नाट्य साहित्य" पर अनुसंधान के प्रति रूचि निर्माण हुई। अतः मैंने अनुसंधान के प्रति शोध-मार्गदर्शिका प्रा.डॉ. प्रतिभा येरेकार मॅडम से बात की, विषय पर गंभीरता से चिंतनकर पक्ष-विपक्ष में विचार-विमर्श किया और प्रस्तुत विषय के प्रति मेरा लगाव देखकर मॅडम ने इस विषय पर शोध-कार्य करने की मुझे अनमुति दी। तत्पश्चात विषय को सुचारु रुप में ढालकर अनुसंधान के लिए निर्धारित किया।

अस्तु, अनुसंधान-क्षेत्र में किया जाने वाला मेरा यह शोध-कार्य अनुसंधान-की दिशा में निश्चित एक नया कार्य होगा।

## अध्याय-निर्धारण

**अध्याय प्रथम :** मीरा कांतः सृजक एवं सृजना।

**अध्याय द्‌वितीय :** हिंदी महिला नाटककारः विकासात्मक अध्ययन।

**अध्याय तृतीय :** मीरा कांत के नाटकों का कथ्यगत अध्ययन।

**अध्याय चतुर्थ :** मीरा कांत के नाटको में चित्रित समस्याएँ।

**अध्याय पंचम :** मीरा कांत के नाटको का शिल्पगत अध्ययन।

**उपसंहार :** मूल्यांकन एवं निष्कर्ष।

**परिशिष्ट :** मौलिक ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाएँ आदि की सूची।

उपर्युक्त निर्धारित अध्यायों में किए जाने वाले अनुसंधान-कार्य का संक्षेप में विवरण निम्नप्रकार से होगा। तथापि उसमें यथावश्यक परिवर्तन संभव है।

**अध्याय प्रथम : मीरा कांतः सृजक एवं सृजना।**

मीरा कांतः सृजक एवं सृजना इस अध्याय में मीरा कांत के जीवन परिचय एवं साहित्यिक जीवन पर प्रकाश डाला जाएगा। जिसमें जन्म, बचपन, शिक्षा, परिवार, कार्यक्षेत्र, व्यक्तित्व, साहित्यिक रूची, सृजन प्रक्रिया, सन्मान, पुरस्कार तथा उनके सृजन का अध्ययन किया जाएगा।

**अध्याय द्‌वितीय : हिंदी महिला नाटककारः विकासात्मक अध्ययन।**

हिन्दी में नाट्‌य-लेखन की एक सुदीर्घ परम्परा दिखाई देती है। इस परम्परा के अन्तर्गत भारतेन्दु युग से लेकर अब तक अनेक महिला नाटककारो

ने नाट्य-रचना की है। हिन्दी नाट्य साहित्य में मन्नू भण्डारी, मृदुला गर्ग, कुसूम कुमार, मृणाल पाण्डे, त्रिपुरारी शर्मा, मीरा कांत, विभा रानी, नदीरा जहीर बब्बर आदि नाटककारों के नाम उल्लेखनीय हैं।

इनका नाट्य साहित्य न केवल संख्यात्मक दृष्टि से अपितु गुणात्मक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं। इन नाटककारों द्वारा रचित नाटकों का कथ्य स्त्री-प्रश्न एवं स्त्री-समस्या तक ही सीमित नहीं है अपितु इनके नाटक व्यापक विषय-भूमि को लेकर रचे गये हैं। अतः इन नाटकों की नाट्य-साहित्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका हैं।

हिंदी महिला नाटककारः विकासात्मक अध्ययन- इस अध्याय में हिंदी महिला नाटककरो का परिचय दिया जाएगा जिसमें उनके नाट्य लेखन परंपरा, नाट्य-संवेदना, भाषा-शैली, पात्र-सृष्टि, कथावस्तु, कथ्य एवं शिल्प आदि का क्रम से अध्ययन किया जाएगा।

**अध्याय तृतीय : मीरा कांत के नाटको का कथ्यगत अध्ययन।**

मीरा कांत के नाटको का कथ्यगत अध्ययन-इस अध्याय में मीरा कांत जी के सभी नाट्य विधा का कथ्यगत अध्ययन किया जाएगा। जैसे-'नेपथ्य राग' में प्रतिभावान संघर्षशील स्त्री के जीवन की पीड़ा को स्वर दिया हैं।

1) **ईहामृग-** रिश्तों की गहराइयों को नापता।

2) **नेपथ्य राग-** प्रतिभावान संघर्षशील स्त्री।

3) **भुवनेश्वर दर भुवनेश्वर-** भुवनेश्वर की संवेदना।

4) **कन्धे पर बैठा था शाप-** स्त्रीवादी दृष्टि।

5) **काली बर्फ-** कश्मीर के समसामायिक यथार्थ को प्रस्तुत।

6) **मेघ-प्रश्न-** प्रेमानुभूति का परिष्कार।

7) **बहती व्यथा सतीसर-** राजनीती की दर्दभरी करूण गाथा।

8) **हुमा को उड़ जाने दो-** युगीन संवेदना।

9) **अंत हाजिर हो-** मानवता की टूटती साँसे।

10) **उत्तर-प्रश्न-** नई पुरुष पीढ़ी का सपना।

11) **पुनरपि दिव्या-** स्त्री विमर्श और दलित विमर्श की प्रतिध्वनी।

12) **तीन अकेले साथ-साथ-** तीनों एकल संघर्षमय स्त्री जीवन।

**अध्याय चतुर्थ : मीरा कांत के नाटको में चित्रित समस्याएँ।**

मीरा कांत द्वारा रचित नाटकों की कथावस्तु का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि इनके नाटको में विषय-वस्तु की व्यापकता एवं विभिन्नता है। इनके नाटको की मूल संवेदना व्यापक एवं विभिन्न विषयों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना हैं। इन्होंने मात्र स्त्री से सम्बन्धित समस्याओं को लेकर नाटक नहीं लिखे अपितु इनका दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक रहा है।

इस अध्याय में मीरा कांत के नाटकों में चित्रित समस्याओं का वर्गीकरण के आधार पर अध्ययन किया जाएगा।

1. राजनैतिक समस्या।

2. आर्थिक समस्या।

3. सामाजिक समस्या।

4. पारिवारिक समस्या आदि।

5. सांस्कृतिक समस्या।

**अध्याय पंचम : मीरा कांत के नाटको का शिल्पगत अध्ययन।**

मीरा कांत के नाटको का शिल्पगत अध्ययन में मीरा कांत के सभी नाटको का भाषा-शिल्प और शैली की दृष्टि से अध्ययन किया जाएगा।

**उपसंहार :**

यहाँ समस्त शोध-प्रबंध के मूल्यांकन को निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत किया जाएगा।

**परिशिष्ट :**

आधार या मौलिक ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाएँ, वेबसाइट, शब्द-कोशन, प्रश्नावली, साक्षात्कार आदि की सूची होगी।

सहाय्यक ग्रंथ सूचि :-


**1.** ईहामृग :- मीरा कांत, सार्थक प्रकाशन, नई दिल्ली

**2.** नेपथ्य राग :- मीरा कांत, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

**3.** अंत हाजिर हो :- मीरा कांत, दोआबा पत्रिका

**4.** हिन्दी महिला नाटककार :- डॉ. भगवान जाधव


**शोध / अनुसंधान-कार्य की पद्धतियाँ :**

कोई भी कार्य आरंभ करने से पहले उसकी दिशा निश्चित की जाती है। उसकी एक विशिष्ट पद्धती के अनुसार ही कार्य किया जाता है। तभी सफल भी होता है। अनुसंधान का कार्य करते समय अनुसंधान की विभिन्न पद्धतियों का अवलंब करना चाहिए।

मेरा शोध-विषय : "मीरा कांत का नाट्य साहित्य" के लिए अनुसंधान की विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा। जैसे-विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति, विवेचनात्मक अनुसंधान पद्धति, आलोचनात्मक अनुसंधान पद्धति, व्याख्यात्मक अनुसंधान पद्धति आदि पद्धतियों का प्रयोग कर अध्ययन किया जाएगा। संभव हुआ तो लेखिका से साक्षात्कार पद्धति का प्रयोग कर अध्ययन किया जाएका। बावजुद इसके इस शोध-कार्य के लिए विषय से संबंधित मूल ग्रंथ या आधार ग्रंथ, विविध संदर्भ ग्रंथ, कोश, विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ आदि का उपयोग किया जाएगा।

शोध-कर्ता
**पार्वती रामप्रसाद देशमुख**

शोध-निर्देशिका
**डॉ.प्रतिभा जी. येरेकार**
सहयोगी प्राध्यापिका एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, धर्माबाद,
जि. नांदेड, महाराष्ट्र